

## CLASS-10 (HINDI)

### पाठ – 1 (स्पर्श)

#### बड़े भाई साहब

#### लेखक - प्रेमचंद

#### मौखिक :

प्रश्न -1 कथा नायक की रुचि किन कार्यों में थी ?

उत्तर - कथा नायक की रुचि पढ़ाई में बिल्कुल नहीं थी । उन्हें मैदान में जाकर कंकरियाँ उछालना , कभी कागज़ की तितलियाँ उड़ाना तथा कभी चारदीवारी पर चढ़कर कूदना अच्छा लगता था ।

प्रश्न -2 बड़े भाई साहब छोटे भाई से हर समय पहला सवाल क्या पूछते थे ?

उत्तर - बड़े भाई साहब छोटे भाई से हर समय पहला सवाल यह पूछते थे कि वह कहाँ गया था ?

प्रश्न -3 दूसरी बार पास होने पर छोटे भाई के व्यवहार में क्या परिवर्तन आया ?

उत्तर - दूसरी बार पास होने पर छोटे भाई के व्यवहार में यह परिवर्तन आया कि उसे कुछ ऐसी धारणा हुई कि वह पास हो ही जाएगा चाहे वह पढ़े अथवा न पढ़े । उसने सोचा कि उसकी तकदीर बलवान है । उसने पढ़ना लिखना बिल्कुल छोड़ दिया ।

प्रश्न -4 बड़े भाई साहब छोटे भाई साहब से उम्र में कितने बड़े थे और वे कौन-सी कक्षा में पढ़ते थे ?

उत्तर - बड़े भाई साहब छोटे भाई साहब से पाँच साल बड़े थे । वे नौवीं जमात में पढ़ते थे ।

प्रश्न -5 बड़े भाई साहब दिमाग को आराम देने के लिए क्या करते थे ?

उत्तर - बड़े भाई साहब दिमाग को आराम देने के लिए कभी कॉपी पर , किताब के हाशियों पर चिड़ियों , कुत्तों , बिल्लियों की तस्वीरें बनाया करते थे । वे इधर - उधर की व्यर्थ की बातें बार - बार लिखा करते थे ।

#### लिखित (क)

प्रश्न -1 छोटे भाई ने अपनी पढ़ाई का टाइम - टेबल बनाते समय क्या - क्या सोचा और फिर उसका पालन क्यों नहीं कर पाया ?

उत्तर - छोटे भाई ने अपनी पढ़ाई का टाइम - टेबल बनाते समय यह सोचा कि आगे से खूब जी लगाकर पढ़ेगा । वह झटपट एक टाइम - टेबल बना डालता परन्तु पहले दिन से ही उसपर अमल नहीं कर पाता । मैदान की सुखद हरियाली , हवा के हलके झोंके , खेल- कूद उसे अपनी ओर आकर्षित कर लेते । पुस्तकों में अरुचि के कारण वह उसका पालन नहीं कर पाता ।

प्रश्न -2 एक दिन जब गुल्ली - डंडा खेलने के बाद छोटा भाई बड़े भाई साहब के सामने पहुँचा तो उनकी क्या प्रतिक्रिया हुई ?

उत्तर - एक दिन जब सुबह गुल्ली - डंडा खेलकर छोटा भाई बड़े भाई साहब के सामने पहुँचा तो बड़े भाई साहब ने मानो तलवार खींच ली और उसपर टूट पड़े । कहने लगे कि इस साल पास होकर तथा अक्वल दर्जे पर आकर उसे बहुत घमंड हो गया है ।

प्रश्न -3 बड़े भाई साहब को अपने मन की इच्छाएँ क्यों दबानी पड़ती थीं ?

उत्तर - बड़े भाई साहब को अपने मन की इच्छाओं को कर्तव्य भावना के कारण दबाना पड़ता था क्योंकि एक -एक दर्जे में वे दो - दो , तीन -तीन साल पड़े रहते थे । वे खेल -कूद एवं अन्य कार्यक्रमों में अपना समय व्यर्थ नहीं गँवाना चाहते थे । यदि वे गलत रास्ते पर चलते तो अपने भाई की रक्षा कैसे करते ?

प्रश्न -4 बड़े भाई साहब छोटे भाई को क्या सलाह देते थे और क्यों ?

उत्तर - बड़े भाई साहब छोटे भाई को यह सलाह देते कि वे चाहे लाख फेल हो गए हों परन्तु उम्र में उससे बड़े हैं । संसार का उन्हें छोटे भाई से अधिक अनुभव है । जो कुछ वे कहते हैं उसे वह गिरह बाँधकर रखे अन्यथा वह पछताएगा । वे उसे दिन - रात पढ़ने तथा खेल - कूद में समय न गँवाने की सलाह देते थे ।

प्रश्न -5 छोटे भाई ने बड़े भाई साहब के नरम व्यवहार का क्या फ़ायदा उठाया ?

उत्तर - लेखक ने बड़े भाई साहब के नरम व्यवहार का पूरा फ़ायदा उठाया । उसने पढ़ना -लिखना बिल्कुल छोड़ दिया । उसने मनमानी करनी शुरू कर दी और उसे पतंगबाजी का शौक पैदा हो गया । वह बड़े भाई की नज़रे बचाकर दिन -रात पतंग उड़ाने लगा ।

### लिखित (ख)

प्रश्न -1 बड़े भाई की डाँट - फटकार अगर न मिलती , तो क्या छोटा भाई कक्षा में अक्वल आता ? अपने विचार प्रकट कीजिए ।

उत्तर - बड़े भाई की डाँट-फटकार का छोटे भाई पर कुछ भी असर न हुआ। उसने भाई की डाँट खाकर एक टाइम-टेबल तो बनाया परन्तु उसपर अमल नहीं कर पाया। वह बिना मेहनत किए कक्षा में सदा प्रथम आया। वास्तव में डाँट-डपट से छोटे भाई का आत्मविश्वास कम ही हुआ। अतः हम कह सकते हैं कि अगर बड़े भाई उसे न डाँटते-फटकारते तो भी वह कक्षा में प्रथम ही आता।

प्रश्न -2 इस पाठ में लेखक ने समूची शिक्षा के किन तौर-तरीकों पर व्यंग्य किया है? क्या आप उनके विचार से सहमत हैं?

उत्तर - इस पाठ में लेखक ने सम्पूर्ण शिक्षा की रटने की प्रणाली पर तीखा व्यंग्य किया है। प्रस्तुत पाठ में बड़ा भाई अपने पाठ्यक्रम के एक-एक शब्द को तोते की तरह रटता रहता है। वह न तो विषय को समझता है और न ही समझे हुए विषय को अपनी भाषा में कहना जानता है। इसी कारण से वह चौबीसो घंटे पढ़ता रहता है, फिर भी परीक्षा में पास नहीं हो पाता। हमारे विचार से ऐसी शिक्षा व्यर्थ है।

प्रश्न -3 बड़े भाई साहब के अनुसार जीवन की समझ कैसे आती है?

उत्तर - बड़े भाई साहब के अनुसार जीवन की समझ पुस्तकें पढ़ने से नहीं अपितु दुनिया देखने से आती है। जिसे जीवन जीने का अनुभव अधिक है, वही समझदार माना जाता है। इसीलिए माँ-बाप, दादा-दादी, कम पढ़-लिखकर भी अधिक ज्ञान और समझ रखते हैं। वे घर खर्च, बीमारी और अन्य प्रबंध करने में पढ़े-लिखों से भी अधिक कुशल होते हैं।

प्रश्न -4 छोटे भाई के मन में बड़े भाई साहब के प्रति श्रद्धा क्यों उत्पन्न हुई?

उत्तर - बड़े भाई ने छोटे भाई को प्रभावित करने के लिए अनुभव और बड़प्पन का महत्व समझाया। उसने बताया कि आदमी को तजुर्बे से समझ आती है, पढ़ने लिखने से नहीं। इसके लिए उसने अपनी अम्मा और दादी का उदहारण दिया। वे कम पढ़-लिखकर भी उम्र के कारण अधिक समझदार हैं। फिर उसने बीमारी का इलाज, घर-खर्च और शेष प्रबंधों का उदहारण दिया। इन सब उक्तियों को सुनकर छोटे भाई का हृदय प्रभावित हो गया। उसे बड़ा होने के कारण अपने बड़े भाई पर श्रद्धा हो गई।

प्रश्न -5 बड़े भाई की स्वभावगत विशेषताएँ बताइए?

उत्तर - बड़ा भाई महत्वाकांक्षी है। वह बड़े होने का सम्मान चाहता है वह अपने आप को अपने छोटे भाई का संरक्षक सिद्ध करने के लिए जी-जान लगा देता है। घोर परिश्रमी और धुनी-बड़ा भाई चाहे पढाई करने की विधि न जानता हो, किन्तु उसके परिश्रम और धुन में कोई कोर-कसर नहीं रहती। वह तीन-तीन बार फ़ैल होकर भी अपनी धुन से पढ़ता रहता है। वाक्पटु - बड़ा भाई उपदेश देने में और बातें करने में बहुत कुशल है। वह अपने आप को बड़ा सिद्ध करने के लिए हर तर्क जुटा लेता है। वह स्वयं को बड़ा सिद्ध करके ही मानता है।

प्रश्न – 6 बड़े भाई साहब ने ज़िंदगी के अनुभव और किताबी ज्ञान में से किसे और क्यों महत्वपूर्ण कहा है?

उत्तर – बड़े भाई साहब ने ज़िन्दगी के अनुभव और किताबें अनुभव को अधिक महत्वपूर्ण माना है। उसके अनुसार अनुभव से ही जीवन की सही समझ विकसित होती है। उसी से जीवन के सारे महत्वपूर्ण काम सधते हैं। बीमारी हो, घर-खर्च चलाना हो या घर के अन्य प्रबंध करने हों, इससे उम्र और अनुभव काम आता है। पढ़ाई-लिखाई काम नहीं आती। लेखक की अम्मा, दादा और हेडमास्टर साहब की बूढ़ी माँ के उदहारण सामने हैं।

प्रश्न – 7 बताइए पाठ के किन अंशों से पता चलता है कि –

(क) छोटा भाई अपने भाई साहब का आदर करता है।

उत्तर – फिर भी मैं भाई साहब का अदब करता था और उनकी नजर बचाकर कनकौए उड़ाता था। माँझा देना, कन्ने बाँधना, पतंग टूर्नामेंट की तैयारियाँ आदि समस्याएँ सब गुप्त रूप से हल की जाती थीं। मैं भाई साहब को यह संदेह न करने देना चाहता था कि उनका सम्मान और लिहाज मेरी नजरों में कम हो गया है।

(ख) भाई साहब को ज़िंदगी का अच्छा अनुभव है।

उत्तर – मैं तुमसे पाँच साल बड़ा हूँ और हमेशा रहूँगा। मुझे दुनिया का और ज़िन्दगी का जो तज़ुर्बा है, तुम उसकी बराबरी नहीं कर सकते, चाहे तुम एम.ए और डी. फिल् और डी .लिट् ही क्यों न हो जाओ। समझ किताबें पढ़ने से नहीं आती, दुनिया देखने से आती है।

(ग) भाई साहब के भीतर भी एक बच्चा है।

उत्तर – संयोग से उसी वक्त एक कटा हुआ कनकौआ हमारे ऊपर से गुज़रा। उसकी डोर लटक रही थी। लड़कों का एक गोल पीछे-पीछे दौड़ा चला आ रहा था। भाई साहब लंबे हैं ही। उछलकर उसकी डोर पकड़ ली और बेतहाशा होस्टल की तरफ़ दौड़े। मैं पीछे-पीछे दौड़ रहा था।

(घ) भाई साहब छोटे भाई का भला चाहते हैं।

उत्तर – तो भाईजान, यह गुरुर दिल से निकाल डालो कि तुम मेरे समीप आ गए हो और अब स्वतंत्र हो। मेरे देखते तुम बेराह न चलने पाओगे। अगर तुम यो न मानोगे तो मैं (थप्पड़ दिखाकर) इसका प्रयोग भी कर सकता हूँ। मैं जानता हूँ, तुम्हें मेरी बातें ज़हर लग रही हैं।

**आशय स्पष्ट कीजिए –**

प्रश्न – 1 इम्तिहान पास कर लेना कोई चीज़ नहीं, असल चीज़ है बुद्धि का विकास।

उत्तर – बड़ा भाई, छोटे भाई के घमंड को तोड़ने के लिए कहता है - तुम कक्षा में प्रथम आकर यह न सोचो कि इससे तुमने बहुत बड़ी सफलता पा ली है और मैं असफल हों गया हूँ। वास्तव में बड़ी चीज़ है - बुद्धि का विकास। उसमें तुम अभी छोटे हो। मेरी बुद्धि विकसित है, तुम अबोध हो, घमंडी हो।

प्रश्न – 2 फिर भी जैसे मौत और विपत्ति के बीच भी आदमी मोह और माया के बंधन में जकड़ा रहता है, मैं फटकार और घुड़कियाँ खाकर भी खेल-कूद का तिरस्कार न कर सकता था।

उत्तर – लेखक खेल-कूद, सैर- सपाटे का बड़ा प्रेमी था। उसका बड़ा भाई इन सब बातों के लिए उसी बहुत डाँटता-डपटता था। उसका तिरस्कार करता था, परन्तु फिर भी वह खेल-कूद को नहीं छोड़ सकता था। जिस प्रकार विविध संकटों में फँसकर भी मनुष्य मोहमाया में बँधा रहता है, उसी प्रकार लेखक भी डाँट-फटकार सह कर भी खेल-कूद के आकर्षण में बँधा रहता था।

प्रश्न – 3 बुनियाद ही पुख्ता न हो, तो मकान कैसे पायेदार बने?

उत्तर – जिस प्रकार मकान को मजबूत बनाने के लिए नींव को मजबूत बनाया जाता है, उसी प्रकार बड़े भाई हर कक्षा को एक साल में नहीं दो-दो सालों में पास करते थे ताकि उनकी पढ़ाई बहुत मजबूत हो।

प्रश्न – 4 आँखें आसमान की ओर थीं और मन उस आकाशगामी पथिक की ओर, जो मंद गति से झूमता पतन की ओर चला आ रहा था, मानो कोई आत्मा स्वर्ग से निकलकर विरक्त मन से नए संस्कार ग्रहण करने जा रही हो।

उत्तर – लेखक पतंग लूटने के लिए आकाश की ओर देखता हुआ दौड़ा जा रहा था। उसकी आँखें आकाश में उड़ने वाली पतंग रूपी यात्रा की ओर थीं। अर्थात् उसे पतंग आकाश में उड़ने वाली दिव्य आत्मा जैसी मनोरम प्रतीत हो रही थी। वह आत्मा मानो मंद गति से झूमती हुई नीचे की ओर आ रही थी।